International Journal of Trend in Scientific Research and Development (IJTSRD)
Volume 6 Issue 6, September-October 2022 Available Online: www.ijtsrd.com e-ISSN: 2456 – 6470

संस्कृत में शतकों की परम्परा का उद्भव और विकास

Dr. Jitendra Singh Chauhan

Principal, Sanskrit Sahitya, SGR Mahavidyalaya, Yaduvansh Nagar, Talgram (Kannauj), Uttar Pradesh, India

सार

संस्कृत भाषा में निबद्ध कथाओं का प्रचुर साहित्य है जो सैकड़ों वर्षो से मनोरंजन करता हुआ उपदेश देता आ रहा है। **कथासाहित्य** से संबद्ध ग्रंथों के आलोचन से स्पष्ट हो जाता है कि संस्कृत साहित्य में तीनों प्रकार की कहानियों के उदाहरण मिलते हैं जो वर्तमान समय में पश्चिमी देशों में (१) फ़ेअरी टेल्स (परियों की कहानियाँ), (२) फ़ेबुल्स (जंतुकथाएँ) तथा (३) डायडेक्टिक टेल्स (उपदेशमयी कहानियाँ) कही जातीं हैं। कथाओं के मूल स्रोत की खोज के लिए वैदिक संहिताओं का अनुशीलन आवश्यक है। ऋग्वेद की मंत्रसंहिता में अनेक रोचक कहानियों की सूचना मिलती है जिनका परिबृहण शौनक ने "बृहद्देवता" में, षड्गुरुशिष्य ने "कात्यायन सर्वानुक्रमणी" की वेदार्थदीपिका में, यास्क ने निरुक्त में, सायण ने अपने वेदभाष्यों में तथा स्याद्विवेद ने "नीति मंजरी" (रचनाकाल 15वीं शती का अंत) में किया है। यहीं से ये कथाएँ पुराणों के माध्यम से होकर जनता के मनोरंजन तथा शिक्षण के निमित्त लौकिक संस्कृत साहित्य में अवतीर्ण हुई।

How to cite this paper: Dr. Jitendra Singh Chauhan "Uddhav and Development of the Tradition of Centuries in Sanskrit" Published in International Journal of Trend in Scientific Research and Development (ijtsrd), ISSN: 2456-6470, Volume-6 | Issue-6, October 2022, pp.1485-1493, URL: www.ijtsrd.com/papers/ijtsrd52104.pdf

IJTSRD52104

Copyright © 2022 by author (s) and International Journal of Trend in Scientific Research and Development Journal. This is an Open Access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution License (CC BY 4.0) (http://creativecommons.org/licenses/by/4.0)

परिचय

संस्कृत की कहानियों का यही सर्वश्रेष्ठ तथा प्राचीन संग्रह है। पंचतन्त्र का उद्देश्य आरंभ से ही रोचक कथाओं के द्वारा नीति तथा सदाचार का शिक्षण रहा है। दक्षिण में महिलारोप्य नामक नगर में अमरकीर्ति राजा के मुर्ख पुत्रों को नीति तथा व्यवहार की शिक्षा देने के लिए विष्णु श्मा ने इस ग्रंथरत्न का प्रणयन किया। इसके अनेक संस्करण भिन्न-भिन्न शताब्दियों में तथा भारत के भिन्न-भिन्न प्रांतों में होते रहे हैं जिनका सांगोपांग अध्ययन कर जर्मनी के प्रसिद्ध संस्कृतज्ञ डॉ. हर्टेल् ने इसके विकास की चार श्रेणियाँ बतलाई हैं। पंचतंत्र का सबसे प्राचीन रूप "तंत्राख्यायिका"[1,2,3] में सुरक्षित है जिसका मूल स्थान कश्मीर है। पंचतंत्र के विभिन्न चार संस्करण आज उपलब्ध हैं–

(१) पंचतंत्र का पहलवी (पुरानी फारसी) अनुवाद,
(२) गुणाढ्य की बृहत्कथा में अंतर्निविष्ट रूप,
(३) दक्षिणी पंचतंत्र, नेपाली पंचतंत्र तथा हितोपदेश के द्वारा निर्दिष्ट संस्करण,
(४) वर्तमान परिवर्धित जैन संस्करण।

"तंत्राख्यायिका" या "तंत्राख्यान" में कथाओं की रूपरेखा बहुत ही परिमित है। नीतिमय पद्यों का संकलन बहुत ही संक्षिप्त तथा औचित्यपूर्ण है। पहलवी अनुवाद का यही मूल रूप है जिसकी रचना चतुर्थ शती में की गई थी। आजकल उपलब्ध पंचतंत्र पूर्णभद्र नामक जैन विद्वान् के परिबृंहण और परिवर्धन का परिणत फल है। इन्होंने 1255 विक्रमी (1199 ई.) में मूल ग्रंथ का आमूल संशोधन किया तथा नीति के पद्यों का समावेश कर इसे भरा पूरा बनाया। पंचतंत्र से प्राचीनतर कहानियों का संग्रह "बौद्ध जातकों" में उपलब्ध होता है जो संख्या में 550 हैं तथा जिनमें भगवान बुद्ध के प्राचीन जन्मों की कथाएँ दी हैं और जो मूलत: पालि भाषा में हैं।[4,5,6]

इन कहानियों का रूपगत वैशिष्ट्य यह है कि एक बड़ी कहानी के भीतर छोटी कहानियाँ एक के भीतर एक उसी रूप में गूँथी गई हैं जिस प्रकार चीन देश के बाक्स में बड़े बाक्स के भीतर छोटे बाक्स एक के भीतर एक बनाए जाते हैं। पंचतंत्र के पाँचों प्रकरणों में पाँच ही मुख्य कहानियाँ हैं जिनके भीतर आवांतर कहानियाँ प्रसंग के अनुसार निविष्ट की गई हैं।[7,8,9]

संस्कृत के कथासाहित्य में अत्यंत लोकप्रिय ग्रंथ है। रोचक होने के अतिरिक्त भाषा की दृष्टि से इतना सरल तथा सुबोध है कि भारत में तथा पश्चिमी देशों में संस्कृत भाषा सीखने के लिए यह पहली पुस्तक है। इसके रचयिता नारायण पंडित है जिनके आश्रयदाता बंगाल के राजा धवलचंद्र थे। रचना का काल 14वीं शती है। पैशाची भाषा में निबद्ध प्राचीन ग्रंथ है जिसकी कहानियों की जानकारी हमें इसके संस्कृत अनुवादों से होती है।

वेताल पंचविंशति (बैतालपचीसी)

इस कथाचक्र का संबंध राजा विक्रमादित्य के अलौकिक तथा शौर्यमंडित जीवन से है। कथासरित्सागर तथा बृहत्कथामंजरी में

ये कहानियाँ प्राय: एक रूप में उपलब्ध होती हैं। इसके अनेक लोकप्रिय संस्करण गद्य-पद्य में मिलते हैं। शिवदासरचित "पंचविंशति" में कथाएँ अधिकतर गद्य में वर्णित हैं, परंतु बीच-बीच में उसे श्लोकों के उद्धरणों से परिपुष्ट किया गया है। जंभलदत्त का संस्करण बिल्कुल गद्यात्मक है। कहानियों में स्थल-स्थल पर अंतर होने पर भी यह संस्करण कश्मीरी संस्करण से विशेष मिलता है। ये कहानियाँ मनोरंजक, ज्ञानवर्धक और कौतूहलजनक हैं जिनमें राजा विक्रमादित्य की अलोकसामान्य चातुरी तथा वीरता का वर्णन बड़े सुंदर ढंग से किया गया है।

सिंहासन द्वात्रिंशिका (सिंहासनबतीसी)

सिंहासन द्वात्रिंशिका भी राजा विक्रम के चरित से संबद्ध है और इसीलिए इसका नाम "विक्रमचरित" भी है। जैन मुनि क्षेमकर का संस्करण उत्तरी वाचनिका का प्रतिनिधि माना जाता है जिसके ऊपर बंगाली संस्करण आश्रित है। दक्षिण भारत में ये ही कहानियाँ "विक्रमचरित" नाम से प्रख्यात हैं। डॉ॰ हर्टेल की दृष्टि में जैन विवरण ही मूल ग्रंथ के समीप आता है, परंतु डॉ॰एड्गर्टन के विचार से दक्षिणी वाचनिका ही मौलिक तथा प्राचीनतर है। दोनों संस्करण 13वीं शती से प्राचीन नहीं हो सकते, क्योंकि दोनों में हेमाद्रि (13शतक) के "दानखंड" का उल्लेख मिलता है।

शुकसप्तति

शुकसप्तति की कहानियाँ कम रोचक नहीं हैं जिनमें कोई सुग्गा अपने गृहस्वामी के परदेश चले जाने पर परपुरुषों के आकर्षणजाल से अपनी स्वामिनी को बचाता है। इसकी विस्तृत वाचनिका के लेखक कोई चिंतामणि भट्ट हैं जिनका समय 12 शतक से पूर्ववर्ती होना चाहिए, क्योंकि उन्होंने इस ग्रंथ में पूर्णभद्र के द्वारा संस्कृत "पंचतंत्र" का स्थान-स्थान पर उपयोग किया है।[10,11,12]

- संस्कृत, विश्व की सबसे पुरानी पुस्तक (वेद) की भाषा है। इसलिए इसे **विश्व की प्रथम भाषा** मानने में कहीं किसी संशय की संभावना नहीं है।[6][7]
- इसकी **सुस्पष्ट व्याकरण** और **वर्णमाला की वैज्ञानिकता** के कारण सर्वश्रेष्ठता भी स्वयं सिद्ध है।
- सर्वाधिक महत्वपूर्ण **साहित्य की धनी** होने से इसकी महत्ता भी निर्विवाद है।
- इसे **देवभाषा** माना जाता है।
- संस्कृत केवल स्वविकसित भाषा नहीं बल्कि **संस्कारित भाषा** भी है, अतः इसका नाम संस्कृत है। केवल संस्कृत ही एकमात्र भाषा है जिसका नामकरण उसके बोलने वालों के नाम पर **नहीं** किया गया है।
- **संस्कृत > सम् + सुट् + 'कृ करणे' + क्त, ('सम्पर्युपेभ्यः करोतौ भूषणे' इस सूत्र से 'भूषण' अर्थ में 'सुट्' या सकार का आगम/ 'भूते' इस सूत्र से भूतकाल(past) को द्योतित करने के लिए संज्ञा अर्थ में क्त-प्रत्यय /कृ-धातु 'करणे' या 'Doing' अर्थ में)** अर्थात् विभूषित, समलंकृत(well-decorated) या संस्कारयुक्त (well-cutured)।
- संस्कृत को संस्कारित करने वाले भी कोई साधारण भाषाविद् नहीं बल्कि महर्षि पाणिनि, महर्षि कात्यायन और योगशास्त्र के प्रणेता महर्षि पतंजलि हैं। इन तीनों महर्षियों ने बड़ी ही कुशलता से योग की क्रियाओं को भाषा में समाविष्ट किया है। यही इस भाषा का रहस्य है।[13,14,15]
- **शब्द-रूप** - विश्व की सभी भाषाओं में एक शब्द का एक या कुछ ही रूप होते हैं, जबकि संस्कृत में प्रत्येक शब्द के 27 रूप होते हैं।
- **द्विवचन** - सभी भाषाओं में **एकवचन** और **बहुवचन** होते हैं जबकि संस्कृत में द्विवचन अतिरिक्त होता है।
- **सन्धि** - संस्कृत भाषा की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता है सन्धि। संस्कृत में जब दो अक्षर निकट आते हैं तो वहाँ सन्धि होने से स्वरूप और उच्चारण बदल जा है ।
- इसे **कम्प्यूटर और कृत्रिम बुद्धि** के लिए सबसे उपयुक्त भाषा माना जाता है।
- शोध से ऐसा पाया गया है कि संस्कृत पढ़ने से **स्मरण शक्ति** बढ़ती है।[8]
- संस्कृत वाक्यों में शब्दों को किसी भी क्रम में रखा जा सकता है। इससे अर्थ का अनर्थ होने की बहुत कम या कोई भी सम्भावना नहीं होती। ऐसा इसलिये होता है क्योंकि सभी शब्द विभक्ति और वचन के अनुसार होते हैं और क्रम बदलने पर भी सही अर्थ सुरक्षित रहता है। जैसे - **अहं गृहं गच्छामि** या **गच्छामि गृहं अहम्** दोनो ही ठीक हैं।[16,17,18]
- संस्कृत विश्व की सर्वाधिक 'पूर्ण' (perfect) एवं तर्कसम्मत भाषा है।[9]
- संस्कृत ही एक मात्र साधन हैं जो क्रमश: अंगुलियों एवं जीभ को लचीला बनाते हैं। इसके अध्ययन करने वाले छात्रों को गणित, विज्ञान एवं अन्य भाषाएँ ग्रहण करने में सहायता मिलती है।
- संस्कृत भाषा में साहित्य की रचना कम से कम छह हजार वर्षों से निरन्तर होती आ रही है। इसके कई लाख ग्रन्थों के पठन-पाठन और चिन्तन में भारतवर्ष के हजारों पुश्त तक के करोड़ों सर्वोत्तम मस्तिष्क दिन-रात लगे रहे हैं और आज भी लगे हुए हैं। पता नहीं कि संसार के किसी देश में इतने काल तक, इतनी दूरी तक व्याप्त, इतने उत्तम मस्तिष्क में विचरण करने वाली कोई भाषा है या नहीं। शायद नहीं है। दीर्घ कालखण्ड के बाद भी असंख्य प्राकृतिक तथा मानवीय आपदाओं (वैदेशिक आक्रमणों) को झेलते हुए आज भी **३ करोड़** से अधिक संस्कृत पाण्डुलिपियाँ विद्यमान हैं। यह संख्या ग्रीक और लैटिन की पाण्डुलिपियों की सम्मिलित संख्या से भी १०० गुना अधिक है। निःसंदेह ही यह सम्पदा छापाखाने के आविष्कार के पहले किसी भी संस्कृति द्वारा सृजित सबसे बड़ी सांस्कृतिक विरासत है।[10]
- संस्कृत केवल एक मात्र भाषा नहीं है अपितु संस्कृत एक विचार है। संस्कृत एक संस्कृति है एक संस्कार है संस्कृत में विश्व का कल्याण है, शांति है, सहयोग है, वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना है।

विचार-विमर्श

इन कथाओं के अतिरिक्त अनेक जैन तथा बौद्ध कहानियों के संग्रह उपलब्ध हैं। जैन लोग कहानियों की रचना में बड़े पटु थे और इस साहित्यिक काव्यरूप को उन्होंने अपने धर्मप्रचार का समर्थ साधन बनाया था। भरटक द्वात्रिंशिका तथा कथारत्नाकार की कहानियाँ इसी कोटि की हैं। "जैन प्रबंधी" में भी लोकप्रिय कहानियाँ खोजी जा सकती हैं। बौद्ध साहित्य में कथासाहित्य का एक विशाल संग्रह है जो अवदानों के नाम से प्रख्यात है। मध्ययुग में भी कहानियों की रचना होती रही है। ऐसी कहानियों का मध्ययुगीन संग्रह मैथिलकोकिल विद्यापति (14वीं शती) के मनोरम ग्रंथ पुरुषपरीक्षा में उपलब्ध होता है। इस प्रकार संस्कृत का कथा साहित्य नाना ग्रंथों में अपना वैभव बिखेर रहा है तथा अपने प्रभाव से विश्व के शिष्ट साहित्य को अपना अनवरत ऋणी बना रहा है।[19,20,21]

भरटकद्वात्रिंशिका कथा परम्परा का एक रोचक कथा संग्रह है। यह भरटकद्वात्रिंशिका की कथाएँ कहानी कहने की वाचिक शैली में निबद्ध हैं। इसकी प्राचीन पोथियों में बताया गया है कि इन कथाओं को श्री सोमसुन्दर के शिष्य श्री साधुराज से सुनकर उन्हीं के किसी शिष्य ने लिखा। हर्तेल नामक जर्मन विद्वान ने, जिन्होंने इस पुस्तक का पहला संस्करण 1922 ई. में जर्मनी से छपवाया था, भरटकद्वात्रिंशिका का रचनाकाल चौदहवीं सदी माना है। सम्भवतः यह पुस्तक इसके भी पहले की रचना है। भरटकद्वात्रिंशिका में बत्तीस कहानियाँ हैं। भरटक शिवभक्त साधुओं का एक प्राचीन सम्प्रदाय है। ये साधु अक्खड़ और जड़बुद्धि होने के कारण समाज में उपहास के पात्र भी बनते थे। भरटकद्वात्रिंशिका में इन्हीं भरटकों की मूर्खता के 32 किस्से हैं। मूर्खों की कहानियों की संस्कृत में यह अकेली अपने ढंग की कथाकृति है।

संस्कृत का कथासाहित्य और विशेषत: पंचतंत्र, विश्वसाहित्य को भारत की देन है। ये कहानियाँ भारत के निवासियों का ही शिक्षण और मनोरंजन नहीं करतीं, प्रत्युत विश्व के सभ्य साहित्य का अंग बनकर नाना देशों के निवासियों का भी मनोरंजन करती हैं। भारतीय कथा की विदेशयात्रा की यह रामकहानी बड़ी ही रोचक तथा शिक्षाप्रद है। फारस (इरान) के प्रसिद्ध सम्राट् खुसरों नौशेरवाँ (531ई.-579 ई.) के राज्यकाल में पंचतंत्र की कहानियाँ पहलवी भाषा (पुरानी) में प्रथमत: 533 ई. में अनूदित की गई। अनुवादक का नाम था हकीम बुरजोई। प्रथम तंत्र के शृगालबंधुओं – करटक और दमनक – के नाम पर यह अनुवाद "कलेलाह-व-दिमनाह" के नाम से प्रसिद्ध हुआ। 560 ई. में "बुद" नामक एक ईसाई संत ने इस पहलवी अनुवाद को सीरियाई भाषा में रूपांतरित किया। 750 ई. में सीरियाई से अरबी अनुवाद करने का श्रेय प्राप्त है अब्दुल्ला-बिन-अलमुकफ्फा को, जो स्वयं तो मुसलमान था, परंतु जिसका पिता पारसी था। इस अनुवाद के भी अनेक अनुवाद लैटिन, ग्रीक, स्पेनिश, इतालीय, जर्मन तथा अंग्रेजी भाषाओं में भिन्न-भिन्न शताब्दियों में होते रहे और इस प्रकार ये कहानियाँ 16वीं शती से पूर्व ही यूरोप के विभिन्न देशों में घर कर गई। उन देशों के निवासियों को इनके भारतीय होने का तनिक भी भान नहीं था। ये "विदापई" की कहानियों के नाम से सर्वत्र विख्यात हो गई। यूनान के प्रख्यात कथासंग्रह ईसप फ़ेबुल तथा अरब की मनोरंजक कहानियों (अलिफ़लैला) की आधारभूत ये ही भारतीय कथाएँ हैं। यूरोप तथा अरब के निवासी इन्हें अपने साहित्य की निधि मानते थे। इसका विचित्र परिणाम यह हुआ कि भगवान बुद्ध ईसाई संतों की श्रेणी में विराजने लगे। यूरोप के मध्ययुग की एक विख्यात कहानी थी – बरलाम और जोज़ेफ़ की कहानी, जिसमें जोज़ेफ़ ने अपने उपदेशों से बरलाम नामक राजा को ईसाई मत में दीक्षित कर लिया। इसमें जोज़ेफ़ नाम "बुदसफ़" के रूप में "बोधिसत्व" का ही अपभ्रंश है और जोज़ेफ़ स्वयं बुद्ध ही है। यह कम आश्चर्य की बात नहीं है कि इन्हीं कहानियों की कृपा से बुद्ध अपने से विरोधी धर्म के मान्य संत के रूप में ईसाई धर्म में गृहीत हैं।[22,23,24]

यह तो हुई मध्ययुग में भारतीय कथाओं की पश्चिमी देश की यात्रा। इससे भी पहले सुदूर प्राचीन काल में भी हिब्रू (यहूदी) लोगों को इन कहानियों का परिचय मिल चुका था। "सुलेमान का न्याय" (सालोमंस जजमेंट) के नाम से प्रसिद्ध कहानी का मूल भी भारतीय है। बाइबिल की अनेक कथाएँ मूलत: भारतीय हैं। प्रसिद्ध यूनानी सम्राट् सिकंदर के विषय की वह लोकप्रिय कहानी भी भारतीय ही है जिसमें उसकी माता के तीव्र पुत्रशोक को कम करने के लिए किसी तत्ववेत्ता ने ऐसे घर से सरसों की खोज में निराश होने पर ही उस वृद्धा को देह की नश्वरता की व्यावहारिक शिक्षा मिली थी। यह कथा भी भगवान बुद्ध द्वारा "किसा गोतमी" (कृशा गौतमी) को दिए गए उपदेश को प्रतिध्वनित करती है। इतना ही नहीं, छठी शती से पूर्व ही ये भारतीय कथाएँ चीन देश के दो अत्यंत प्राचीन विश्वकोशों में अनूदित की गई उपलब्ध होती हैं। फलत: समस्त सभ्य संसार के लोग प्राचीन तथा मध्ययुग में इन भारतीय कहानियों से आनंद उठाते थे और अपने जीवन को सुखमय बनाते थे। मध्ययुग का एक प्रख्यात कथा-चक्र था जो इटली देश के कवि पेत्रार्क के विश्वविश्रुत कथा ग्रंथ "डेकामेराँ" में आज भी सुरक्षित है। आलोचकों से यह बात परोक्ष नहीं है कि शेक्सपियर के अनेक नाटकों की कथावस्तु इसी रोचक ग्रंथ से गृहीत है। डेकामेराँ की अधिकांश कहानियाँ भारतवर्ष की कहानियों का किंचित् परिवर्धित तथा परिवर्तित रूप हैं। "शकुसप्तति" की कहानियाँ भी फारस में बहुत ही प्रख्यात और लोकप्रिय थीं। 1329-30 में हाफिज़ और सादी के समकालीन एक लेखक ने "तूतीनामा" के नाम से फारसी में इसका अनुवाद प्रस्तुत किया जिसका तुर्की भाषा में अनुवाद सौ वर्ष के भीतर ही किया गया। 18वीं शती में कादिरी नामक लेखक ने इसका नया अनुवाद तैयार किया। इस फारसी अनुवाद की बहुत सी कहानियाँ यूरोप में फैल गई। जर्मनी के प्रसिद्ध प्राच्यविद् डॉ॰ थिओडोर बेनफ़ी ने बड़े अध्यवसाय से भारतीय कहानियों की इस यात्रा का सांगोपांग विवरण प्रस्तुत किया है। फलत: विश्वसाहित्य को भारतवर्ष की देनों में कथाओं की देन बड़ी ही व्यापक, रोचक तथा लोकप्रिय है।[25,26]

- संस्कृत कई भारतीय भाषाओं की जननी है। इनकी अधिकांश शब्दावली या तो संस्कृत से ली गई है या संस्कृत से प्रभावित है। पूरे भारत में संस्कृत के अध्ययन-अध्यापन से भारतीय भाषाओं में अधिकाधिक एकरूपता आएगी जिससे भारतीय एकता बलवती होगी। यदि इच्छा-शक्ति हो तो संस्कृत को हिब्रू की भाँति पुनः प्रचलित भाषा भी बनाया जा सकता है।
- हिन्दू, बौद्ध, जैन आदि धर्मों के प्राचीन धार्मिक ग्रन्थ संस्कृत में हैं।

- हिन्दुओं के सभी पूजा-पाठ और धार्मिक संस्कार की भाषा संस्कृत ही है।
- हिन्दुओं, बौद्धों और जैनों के नाम भी संस्कृत पर आधारित होते हैं।[27,28]
- भारतीय भाषाओं की तकनीकी शब्दावली भी संस्कृत से ही व्युत्पन्न की जाती है। भारतीय संविधान की धारा 343, धारा 348 (2) तथा 351 का सारांश यह है कि देवनागरी लिपि में लिखी और मूलत: संस्कृत से अपनी पारिभाषिक शब्दावली को लेने वाली हिन्दी राजभाषा है।
- संस्कृत, भारत को एकता के सूत्र में बाँधती है।
- संस्कृत का साहित्य अत्यन्त प्राचीन, विशाल और विविधतापूर्ण है। इसमें अध्यात्म, दर्शन, ज्ञान-विज्ञान और साहित्य का खजाना है। इसके अध्ययन से ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में प्रगति को बढ़ावा मिलेगा।[29,30]

संस्कृत को कम्प्यूटर के लिए (कृत्रिम बुद्धि के लिए) सबसे उपयुक्त भाषा माना जाता है।[

संस्कृत भाषा के शब्द मूलत रूप से सभी आधुनिक भारतीय भाषाओं में हैं। सभी भारतीय भाषाओं में एकता की रक्षा संस्कृत के माध्यम से ही हो सकती है। मलयालम, कन्नड और तेलुगु आदि दक्षिणात्य भाषाएं संस्कृत से बहुत प्रभावित हैं। यहाँ तक कि तमिल में भी संस्कृत के हजारों शब्द भरे पड़े हैं और मध्यकाल में संस्कृत का तमिल पर गहरा प्रभव पड़ा।[12]

विश्व की अनेकानेक भाषाओं पर संस्कृत ने गहरा प्रभाव डाला है।[13] संस्कृत भारोपीय भाषा परिवर में आती है और इस परिवार की भाषाओं से भी संस्कृत में बहुत सी समानता है। वैदिक संस्कृत और अवेस्ता (प्राचीन इरानी) में बहुत समानता है। भारत के पड़ोसी देशों की भाषाएँ सिंहल, नेपाली, म्यांमार भाषा, थाई भाषा, ख्मेर[14] संस्कृत से प्रभावित हैं। बौद्ध धर्म का चीन ज्यों-ज्यों प्रसार हुआ वैसे वैसे पहली शताब्दी से दसवीं शताब्दी तक सैकड़ों संस्कृत ग्रन्थों का चीनी भाषा में अनुवाद हुआ। इससे संस्कृत के हजरों शब्द चीनी भाषा में गए।[15] उत्तरी-पश्चिमी तिब्बत में तो अज से १००० वर्ष पहले तक संस्कृत की संस्कृति थी और वहाँ गान्धारी भाषा का प्रचलन था।[31,32]

तत्सम-तद्भव-समान-शब्द									
संस्कृत शब्द	**हिन्दी**	**मलयालम**	**कन्नड**	**तेलुगु**	**ग्रीक**	**लैटिन**	**अंग्रेजी**	**जर्मन**	**फ़ारसी**
मातृ	माता	अम्मा				मातेर	मदर्	मुटेर	मादर
पितृ/पितर	पिता	अच्चन्				पातेर	फ़ाथर्	फ़ाटेर	
दुहितृ	बेटी						दाह्तर्		
भ्रातृ/भ्रातर	भाई						ब्रदर्	ब्रुडेर	
पत्तनम्	पत्तन	पट्टणम्					टाउन		
वैधुर्यम्	विधुर	वैडूर्यम्	वैडूर्यम्				विजोवर्		
सप्तन्	सात					सेप्तम्	सेव्हेन्	ज़ीबेन	
अष्टौ	आठ				होक्तो	ओक्तो	ऐय्ट्	आख़्ट	
नवन्	नौ				हेणेअ	नोवेम्	नायन्	नोएन	
द्वारम्	द्वार						दोर्	टोर	
नालिकेरः	नारियल	नाळिकेरम्						कोकोस्नुस्स	
सम	समान						same		
तात=पिता							Dad		
अहम्							I am		
स्मार्त							Smart		
पंडित	पंडित/विशेषज्ञ						Pundit		

परिणाम

संस्कृत (संस्कृतम्) भारतीय उपमहाद्वीप की एक भाषा है। संस्कृत एक हिंद-आर्य भाषा है जो हिंद-यूरोपीय भाषा परिवार की एक शाखा है। आधुनिक भारतीय भाषाएँ [33,34]जैसे, हिंदी, बांग्ला, मराठी, सिन्धी, पंजाबी, नेपाली, आदि इसी से उत्पन्न हुई हैं। इन सभी भाषाओं में यूरोपीय बंजारों की रोमानी भाषा भी शामिल है। संस्कृत में वैदिक धर्म से संबंधित लगभग सभी धर्मग्रंथ लिखे गए हैं। बौद्ध धर्म (विशेषकर महायान) तथा जैन मत के भी कई महत्त्वपूर्ण ग्रंथ संस्कृत में लिखे गए हैं। आज भी हिंदू धर्म के अधिकतर यज्ञ और पूजा संस्कृत में ही होती हैं। संस्कृत आमतौर पर कई पुरानी इंडो-आर्यन किस्मों को जोड़ती है। इनमें से सबसे पुरातन ऋग्वेद में पाया जाने वाला वैदिक संस्कृत है, जो 3000 ईसा पूर्व और 2000 ईसा पूर्व के बीच रचित 1,028 भजनों का एक संग्रह है, जो इंडो-आर्यन जनजातियों द्वारा आज के उत्तरी अफगानिस्तान और उत्तरी भारत में अफगानिस्तान से पूर्व की ओर पलायन करते हैं। वैदिक संस्कृत ने उपमहाद्वीप की प्राचीन प्राचीन भाषाओं के साथ बातचीत की, नए पौधों और जानवरों के नामों को अवशोषित किया। द्रविड़ कोई भाषा नहीं बल्कि एक प्राचीन भारतीय राज्य था।[35,36]

परम्परानुसार संस्कृत साहित्य			
परम्परा	**संस्कृत ग्रन्थ, विधा श्रेणी**	**उदाहरण**	**सन्दर्भ**
हिन्दू	धर्मग्रन्थ	वेद, उपनिषद, आगम, भागवद्गीता	[17][18]
	भाषा, व्याकरण	अष्टाध्यायी, गणपाठ, पदपाठ, वार्त्तिक, महाभाष्य, वाक्यपदीय, फिट-सूत्र	[19][20][21]
	सामान्य नियम एवं धार्मिक नियम	धर्मसूत्र/धर्मशास्त्र,[a] मनुस्मृति	[22][23]
	राजनीति, राजशास्त्र	अर्थशास्त्र	[24]
	कालगणना, गणित, तर्क	कल्प, ज्योतिष, गणितशास्त्र, शुल्बसूत्र, सिद्धान्त, आर्यभटीय, दशगीतिकासूत्र, सिद्धान्तशिरोमणि, गणितसारसङ्ग्रह, बीजगणितम् [b]	[25][26]
	आयुर्विज्ञान, आयुर्वेद, स्वास्थ्य	आयुर्वेद, सुश्रुतसंहिता, चरकसंहिता	[27][28]
	कामशास्त्र	कामसूत्र, पञ्चसायक, रतिरहस्य, रतिमञ्जरी, अनङ्गरङ्ग, समयमातृका	[29][30]
	महाकाव्य	रामायण, महाभारत	[31][32]
	राजवंशीय काव्य	रघुवंश, कुमारसम्भव	[33]
	सुभाषित एवं शिक्षाप्रद साहित्य	सुभाषित, नीतिशतक, बोधिचर्यावतार, श्रृंगार-ज्ञान-निर्णय, कलाविलास, चतुर्वर्गसङ्ग्रह, नीतिमञ्जरी, मुग्धोपदेश, सुभाषितरत्नसन्दोह, योगशास्त्र, श्रृंगार-वैराग्य-तरङ्गिणी	[34]
	नाटक, नृत्य तथा अन्य कलाएँ	नाट्यशास्त्र	[35][36][37]
	संगीत	संगीतशास्त्र, संगीतरत्नाकर, संगीत पारिजात	[38][39]
	काव्यशास्त्र	काव्यशास्त्र	[40]
	मिथक	पुराण	[41]
	रहस्यमय अटकलें, दर्शन	दर्शन, सांख्य, योग, न्याय, वैशेशिक, मीमांसा, वेदान्त वैष्णव, शैव, शाक्त, स्मार्त, आदि	[42]
	कृषि एवं भोजन	कृषिशास्त्र, वृक्षायुर्वेद	[43]
	डिजाइन, शिल्प, वास्तुशास्त्र	शिल्पशास्त्र, समराङ्गणसूत्रधार	[44][45]
	मन्दिर, मूर्तिकला	बृहत्संहिता,	[46]
	संस्कार	गृह्यसूत्र	[47]
बौद्ध धर्म	धर्मग्रन्थ, मठ-सम्बन्धी नियम	त्रिपिटक,[c] महायान सम्प्रदाय के ग्रन्थ, अन्य	[48][49][50]
जैन धर्म	धर्मशास्त्र, दर्शन	तत्त्वार्थ सूत्र, महापुराण एवं अन्य	[51][52]

इनके अतिरिक्त रसविद्या, तंत्र साहित्य, वैमानिक शास्त्र तथा अन्यान्य विषयों पर संस्कृत में ग्रन्थ रचे गये जिनमें से कुछ आज भी उपलब्ध हैं।[37,38]

भारत के संविधान की आठवीं अनुसूची में संस्कृत को भी सम्मिलित किया गया है। यह उत्तराखण्ड की द्वितीय राजभाषा है। आकाशवाणी और दूरदर्शन से संस्कृत में समाचार प्रसारित किए जाते हैं। कतिपय वर्षों से डी. डी. न्यूज (DD News) द्वारा **वार्तावली** नामक अर्धहोरावधि का संस्कृत-कार्यक्रम भी प्रसारित किया जा रहा है, जो हिन्दी चलचित्र गीतों के संस्कृतानुवाद, सरल-संस्कृत-शिक्षण, संस्कृत-वार्ता और महापुरुषों की संस्कृत जीवनवृत्तियों, सुभाषित-रत्नों आदि के कारण अनुदिन लोकप्रियता को प्राप्त हो रहा है। संस्कृत भाषा का व्याकरण अत्यन्त परिमार्जित एवं वैज्ञानिक है। बहुत प्राचीन काल से ही अनेक व्याकरणाचार्यों ने संस्कृत व्याकरण पर बहुत कुछ लिखा है। किन्तु पाणिनि का संस्कृत व्याकरण पर किया गया कार्य सबसे प्रसिद्ध है। उनका अष्टाध्यायी किसी भी भाषा के व्याकरण का सबसे प्राचीन ग्रन्थ है।

संस्कृत में संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया के कई तरह से शब्द-रूप बनाये जाते हैं, जो व्याकरणिक अर्थ प्रदान करते हैं। अधिकांश शब्द-रूप मूलशब्द के अन्त में प्रत्यय लगाकर बनाये जाते हैं। इस तरह ये कहा जा सकता है कि संस्कृत एक बहिर्मुखी-अन्त-श्लिष्टयोगात्मक भाषा है। संस्कृत के व्याकरण को वागीश शास्त्री ने वैज्ञानिक स्वरूप प्रदान किया है।

संस्कृत भारत की कई लिपियों में लिखी जाती रही है, लेकिन आधुनिक युग में **देवनागरी लिपि** के साथ इसका विशेष संबंध है। देवनागरी लिपि वास्तव में संस्कृत के लिए ही बनी है, इसलिए इसमें हर एक चिह्न के लिए एक और केवल एक ही ध्वनि है। देवनागरी में १३ स्वर और ३३ व्यंजन हैं। देवनागरी से रोमन लिपि में लिप्यन्तरण के लिए दो पद्धतियाँ अधिक प्रचलित हैं : IAST और ITRANS. शून्य, एक या अधिक व्यंजनों और एक स्वर के मेल से एक अक्षर बनता है।[39,40,41]

संस्कृत, क्षेत्रीय लिपियों में लिखी जाती रही है।

स्वर

ये स्वर संस्कृत के लिए दिए गए हैं। हिन्दी में इनके उच्चारण थोड़े भिन्न होते हैं।

वर्णाक्षर	"प" के साथ मात्रा	IPA उच्चारण	"प्" के साथ उच्चारण	IAST समतुल्य	अंग्रेज़ी समतुल्य	हिन्दी में वर्णन
अ	प	/ ə /	/ pə /	a	लघु या दीर्घ Schwa: जैसे a, **a**bove या **a**go में	मध्य प्रसृत स्वर
आ	पा	/ ɑ: /	/ pɑ: /	ā	दीर्घ Open back unrounded vowel: जैसे a, f**a**ther में	दीर्घ विवृत पश्च प्रसृत स्वर
इ	पि	/ i /	/ pi /	i	लघु close front unrounded vowel: जैसे i, b**i**t में	ह्रस्व संवृत अग्र प्रसृत स्वर
ई	पी	/ i: /	/ pi: /	ī	दीर्घ close front unrounded vowel: जैसे i, mach**i**ne में	दीर्घ संवृत अग्र प्रसृत स्वर
उ	पु	/ u /	/ pu /	u	लघु close back rounded vowel: जैसे u, p**u**t में	ह्रस्व संवृत पश्च वर्तुल स्वर
ऊ	पू	/ u: /	/ pu: /	ū	दीर्घ close back rounded vowel: जैसे oo, sch**oo**l में	दीर्घ संवृत पश्च वर्तुल स्वर
ए	पे	/ e: /	/ pe: /	e	दीर्घ close-mid front unrounded vowel: जैसे a in g**a**me (संयुक्त स्वर नहीं) में	दीर्घ अर्धसंवृत अग्र प्रसृत स्वर
ऐ	पै	/ ai /	/ pai /	ai	दीर्घ diphthong: जैसे ei, h**ei**ght में	दीर्घ द्विमात्रिक स्वर
ओ	पो	/ o: /	/ po: /	o	दीर्घ close-mid back rounded vowel: जैसे o, t**o**ne (संयुक्त स्वर नहीं) में	दीर्घ अर्धसंवृत पश्च वर्तुल स्वर
औ	पौ	/ au /	/ pau /	au	दीर्घ diphthong: जैसे ou, h**ou**se में	दीर्घ द्विमात्रिक स्वर

संस्कृत में **ऐ** दो स्वरों का युग्म होता है और "अ-इ" या "आ-इ" की तरह बोला जाता है। इसी तरह **औ** "अ-उ" या "आ-उ" की तरह बोला जाता है।

इसके अलावा निम्नलिखित वर्ण भी स्वर माने जाते हैं :

- **ऋ** -- वर्तमान में, स्थानीय भाषाओं के प्रभाव से इसका अशुद्ध उच्चारण किया जाता है। आधुनिक हिन्दी में "रि" की तरह तथा मराठी में "रु" की तरह किया जाता है ।
- **ॠ** -- केवल संस्कृत में (दीर्घ ऋ)
- **ऌ** -- केवल संस्कृत में (syllabic retroflex l)
- **अं** -- न् , म् , ङ् , ञ् , ण् और ं के लिए या स्वर का नासिकीकरण करने के लिए[42,43,44]
- **अँ** -- स्वर का नासिकीकरण करने के लिए (संस्कृत में नहीं उपयुक्त होता)
- **अः** -- अघोष "ह्" (निःश्वास) के लिए

जब कोई स्वर प्रयोग नहीं हो, तो वहाँ पर 'अ' माना जाता है। स्वर के न होने को हलन्त् अथवा विराम से दर्शाया जाता है। जैसे कि क् ख् ग् घ्।

	स्पर्श				
	अघोष		घोष		नासिक्य
	अल्पप्राण	महाप्राण	अल्पप्राण	महाप्राण	
कण्ठ्य	क / kə / k; अंग्रेजी: s**k**ip	ख / k^hə / kh; अंग्रेजी: **c**at	ग / gə / g; अंग्रेजी: **g**ame	घ / g^hə / gh; महाप्राण /g/	ङ / ŋə / n; अंग्रेजी: ri**ng**
तालव्य	च / cə / or / ʧə / ch; अंग्रेजी: **ch**at	छ / c^hə / or /$ʧ^h$ə/ chh; महाप्राण /c/	ज / ɟə / or / ʤə / j; अंग्रेजी: **j**am	झ / $ɟ^h$ə / or / $ʤ^h$ə / jh; महाप्राण /ɟ/	ञ / ɲə / n; अंग्रेजी: fi**n**ch
मूर्धन्य	ट / ʈə / t; अमेरिकी अंग्रेजी:: hur**t**ing	ठ / $ʈ^h$ə / th; महाप्राण /ʈ/	ड / ɖə / d; अमेरिकी अंग्रेजी:: mur**d**er	ढ / $ɖ^h$ə / dh; महाप्राण /ɖ/	ण / ɳə / n; अमेरिकी अंग्रेज़ी:: hu**n**ter

दन्त्य	त / t̪ə / t; स्पैनिश: **t**oma**t**e	थ / t̪ʰə / th; महाप्राण /t̪/	द / d̪ə / d; स्पैनिश: **d**on**d**e	ध / d̪ʱə / dh; महाप्राण /d̪/	न / nə / n; अंग्रेज़ी: **n**ame
ओष्ठ्य	प / pə / p; अंग्रेज़ी: s**p**in	फ / pʰə / ph; अंग्रेज़ी: **p**it	ब / bə / b; अंग्रेज़ी: **b**one	भ / bʱə / bh; महाप्राण /b/	म / mə / m; अंग्रेज़ी: **m**ine

स्पर्शरहित				
	तालव्य	मूर्धन्य	दन्त्य/वर्त्स्य	कण्ठोष्ठ्य/काकल्य
अन्तस्थ	य / jə / y; अंग्रेज़ी: **y**ou	र / rə / r; स्कॉटिश अंग्रेज़ी: t**r**ip	ल / lə / l; अंग्रेजी: **l**ove	व / ʋə / v; अंग्रेजी: **v**ase
ऊष्म/ संघर्षी	श / ʃə / sh; अंग्रेज़ी: **sh**ip	ष / ʂə / shh; मूर्धन्य /ʃ/	स / sə / s; अंग्रेज़ी: **s**ame	ह / ɦə / or / hə / h; अंग्रेज़ी: be**h**ind

टिप्पणी

- इनमें से **ळ** (मूर्धन्य पार्विक अन्तस्थ) एक अतिरिक्त व्यंजन है जिसका प्रयोग हिन्दी में नहीं होता है। मराठी और वैदिक संस्कृत में इसका प्रयोग किया जाता है।[45,46]
- संस्कृत में **ष** का उच्चारण ऐसे होता था : जीभ की नोंक को मूर्धा (मुँह की छत) की ओर उठाकर **श** जैसी ध्वनि करना। शुक्ल यजुर्वेद की माध्यंदिनि शाखा में कुछ वाक्यों में **ष** का उच्चारण **ख** की तरह करना मान्य था।

निष्कर्ष

भारत के संविधान में संस्कृत आठवीं अनुसूची में सम्मिलित अन्य भाषाओं के साथ विराजमान है। त्रिभाषा सूत्र के अन्तर्गत संस्कृत भी आती है। हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषाओं की की वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली संस्कृत से निर्मित है।

भारत तथा अन्य देशों के कुछ संस्कृत विश्वविद्यालयों की सूची नीचे दी गयी है- (देखें, भारत स्थित संस्कृत विश्वविद्यालयों की सूची)[47,48]

स्थापना वर्ष	नाम	स्थान
1791	सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय	वाराणसी
1876	सद्विद्या पाठशाला	मैसूर
1961	कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय	दरभंगा
1962	राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, तिरुपति	तिरुपति
1962	श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ	नयी दिल्ली
1970	राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली	नयी दिल्ली
1981	श्री जगन्नाथ संस्कृत विश्वविद्यालय	पुरी
1986	नेपाल संस्कृत विश्वविद्यालय	नेपाल
1993	श्री शंकराचार्य संस्कृत विश्वविद्यालय	कालडी
1997	कविकुलगुरु कालिदास संस्कृत विश्वविद्यालय	रामटेक
2001	जगद्गुरु रामानन्दाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय	जयपुर
2005	श्री सोमनाथ संस्कृत विश्वविद्यालय	वेरावल
2008	महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय	उज्जैन
2011	कर्नाटक संस्कृत विश्वविद्यालय	बंगलुरु

संदर्भ

[1] Mascaró, Juan (2003). The Bhagavad Gita. Penguin. पपृ॰ 13 , ff. आई॰ऍस॰बी॰ऍन॰ 978-0-14-044918-1. The Bhagawad Gita, an intensely spiritual work, that forms one of the cornerstones of the Hindu faith, and is also one of the masterpieces of Sanskrit poetry. (from the backcover)

[2] Besant, Annie (trans) (1922). The Bhagavad-gita; or, The Lord's Song, with text in Devanagari, and English translation. Madras: G. E. Natesan & Co. प्रवृत्ते शस्त्रसम्पाते धनुरुद्यम्य पाण्डवः ॥ २० ॥

Then, beholding the sons of Dhritarâshtra standing arrayed, and flight of missiles about to begin, ... the son of Pându, took up his bow,(20) हृषीकेशं तदा वाक्यमिदमाह महीपते । अर्जुन उवाच । ...॥ २१ ॥

And spake this word to Hrishîkesha, O Lord of Earth: Arjuna said: ...

[3] Radhakrishnan, S. (1948). The Bhagavadgītā:

With an introductory essay, Sanskrit text, English translation, and notes. London, UK: George Allen and Unwin Ltd. पृ॰ 86. ... pravyite Sastrasampate
dhanur udyamya pandavah (20)
Then Arjuna, ... looked at the sons of Dhrtarastra drawn up in battle order; and as the flight of missiles (almost) started, he took up his bow.
hystkesam tada vakyam
idam aha mahipate ... (21)
And, O Lord of earth, he spoke this word to Hrsikesha (Krsna): ...

[4] "Comparative speaker's strength of scheduled languages -1971, 1981, 1991 and 2001". Census of India, 2001. Office of the Registrar and Census Commissioner, भारत. अभिगमन तिथि 31 दिसम्बर 2009.

[5] ""The Old Vedic language had its origin outside the subcontinent. But not Sanskrit."".

[6] Sagarika Dutt (2006). India in a Globalized World. Manchester University Press. p. 36. ISBN 978-1-84779-607-3.

[7] Gabriel J. Gomes (2012). Discovering World Religions. iUniverse. p. 54. ISBN 978-1-4697-1037-2.

[8] अमेरिकी पत्रिका (साइंटिफिक अमेरिकन) का दावा- संस्कृत मंत्रों के उच्चारण से बढ़ती है याददाश्त (जनवरी २०१८)

[9] Is Sanskrit the most suitable language for natural language processing?

[10] Guide to OCR for Indic Scripts: Document Recognition and Retrieval (edited by Venu Govindaraju, Srirangaraj Ranga Setlur)

[11] We should thank Sanskrit for the 21st century

[12] Tracing the Trajectory of Linguistic changes in Tamil: Mining the corpus of Tamil Texts

[13] 'Sanskrit has had profound influence on world languages'

[14] Sanskrit's Influence on Khmer

[15] Sanskrit had an influence on Chinese language

[16] How Sanskrit Language Is Associated With The Tibet and Xinjiang?

[17] Jan Gonda (1975), Vedic literature (Saṃhitās and Brāhmaṇas), Otto Harrassowitz Verlag, ISBN 3-447-01603-5

[18] Teun Goudriaan, Hindu Tantric and Śākta Literature, Otto Harrassowitz Verlag, ISBN 3-447-02091-1

[19] Dhanesh Jain & George Cardona 2007.

[20] Hartmut Scharfe, A history of Indian literature. Vol. 5, Otto Harrassowitz Verlag, ISBN 3-447-01722-8

[21] Keith 1996.

[22] Duncan, J.; Derrett, M. (1978). Gonda, Jan (संपा॰). Dharmasastra and Juridical Literature: A history of Indian literature. 4. Otto Harrassowitz Verlag. आई॰ऍस॰बी॰ऍन॰ 3-447-01519-5.

[23] Keith 1996, ch 12.

[24] Olivelle, Patrick (31 January 2013). King, Governance, and Law in Ancient India. Oxford University Press. आई॰ऍस॰बी॰ऍन॰ 978-0-19-989182-5.

[25] Kim Plofker (2009), Mathematics in India, Princeton University Press, ISBN 978-0-691-12067-6

[26] Pingree, David. A Census of the Exact Sciences in Sanskrit. 1–5. American Philosophical Society. आई॰ऍस॰बी॰ऍन॰ 978-0-87169-213-9.

[27] Valiathan, M.S. (2003). The Legacy of Caraka. Orient Blackswan. आई॰ऍस॰बी॰ऍन॰ 978-81-250-2505-4.

[28] Zysk, Kenneth (1998). Medicine in the Veda. Motilal Banarsidass. आई॰ऍस॰बी॰ऍन॰ 978-81-208-1401-1.

[29] Meyer, J.J. (22 February 2013). Sexual Life in Ancient India. 1 & 2. Oxford University Press. आई॰ऍस॰बी॰ऍन॰ 978-1-4826-1588-3.

[30] Keith 1996, ch 14.

[31] John L. Brockington 1998.

[32] Sures Chandra Banerji (1989). A Companion to Sanskrit Literature. Motilal Banarsidass. पपृ॰ 1–4, with a long list in Part , II. आई॰ऍस॰बी॰ऍन॰ 978-81-208-0063-2 – वाया Google Books. Spanning a period of over three thousand years; containing brief accounts of authors, works, characters, technical terms, geographical names, myths, [and] legends, [with] several appendices.

[33] Keith & 1996 §4.

[34] Sternbach, Ludwik (1974). Subhāṣita: Gnomic and didactic literature. Otto Harrassowitz Verlag. आई॰ऍस॰बी॰ऍन॰ 978-3-447-01546-2.

[35] Berriedale, Keith A. The Sanskrit Drama. Oxford University Press – वाया Archive.org.

[36] Baumer, Rachel; Brandon, James (1993). Sanskrit Drama in Performance. Motilal Banarsidass. आई॰ऍस॰बी॰ऍन॰ 81-208-0772-3.

[37] Khokar, Mohan (1981). Traditions of Indian Classical Dance. Peter Owen Publishers. आई॰ऍस॰बी॰ऍन॰ 978-0-7206-0574-7.

[38] te Nijenhuis, E. "Musicological literature". Scientific and Technical Literature. A History of Indian Literature. 6. Otto Harrassowitz Verlag. आई॰ऍस॰बी॰ऍन॰ 978-3-447-01831-9. Fasc. 1.

[39] Lewis Rowell, Music and Musical Thought in Early India, University of Chicago Press, ISBN 0-226-73033-6

[40] Edwin Gerow, A history of Indian literature. Vol. 5, Otto Harrassowitz Verlag, ISBN 3-447-01722-8

[41] Ludo Rocher (1986), The Puranas, Otto Harrassowitz Verlag, ISBN 978-3-447-02522-5

[42] Karl Potter, The Encyclopedia of Indian Philosophies, Volumes 1 through 27, Motilal Banarsidass, ISBN 81-208-0309-4

[43] Gyula Wojtilla (2006), History of Kṛṣiśāstra, Otto Harrassowitz Verlag, ISBN 978-3-447-05306-8

[44] Acharya, P.K. (1946). An Encyclopedia of Hindu Architecture. 7. Oxford University Press. Also see volumes 1–6.

[45] Bruno Dagens (1995), Mayamata : An Indian Treatise on Housing Architecture and Iconography, ISBN 978-81-208-3525-2

[46] Stella Kramrisch, Hindu Temple, Vol. 1 and 2, Motilal Banarsidass, ISBN 978-81-208-0222-3

[47] Rajbali Pandey (2013), Hindu Saṁskāras: Socio-religious study of the Hindu sacraments, 2nd Edition, Motilal Banarsidass, ISBN 978-8120803961

[48] Banerji 1989, पृ॰प॰ 634–635 with the list in Appendix IX.